चित्तौड़गढ़ दुर्ग का मानचित्र

उ

1. रतन सिंह महल
2. कुम्भा महल
3. कुम्भास्वामी मंदिर
4. जैन कीर्ति स्तम्भ
5. कीर्ति स्तम्भ (विजय स्तम्भ)
6. समाधीश्वर मंदिर
7. गोमुख कुण्ड
8. कालिका माता मंदिर
9. पद्मिनी महल

भ्रमण समय : प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्योस्त तक

प्रवेश शुल्क

भारतीय	:	5 रुपये
विदेशी	:	100 रुपये

(15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए नि:शुल्क प्रवेश)

Printed by : TPPL, Jpr # 9829011091

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

प्रत्यकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल, जयपुर

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ अथवा प्राचीन चित्रकूट सातवीं से सोलहवीं शती ई. के मध्य तक राजपूत सत्ता का मुख्य केन्द्र रहा है। इस किले का निर्माण मोरी वंश के राजा चित्रांगद ने सातवीं शती ई. में करवाया था। महाराणा कुम्भा (1433-68 ई.) ने अपने समय में किले में स्थित अधिकांश मंदिरों तथा भवनों में परिवर्तन व परिवर्द्धन करवाया। चित्तौड़ कई राजवंशों के अधिकार में रहा, जिसमें मोरी या मौर्य (7-8वीं सदी ई.), प्रतिहार (9-10वीं सदी ई.), परमार (10-11वीं सदी ई.), सोलंकी (12वीं सदी ई.) तथा गुहिलोत अथवा सिसोदिया प्रमुख है। अपने लम्बे इतिहास में यह किला तीन बार आक्रान्त हुआ-1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा, 1535 ई. में गुजरात के शासक बहादुर शाह द्वारा तथा 1567-68 ई. में मुगल शासक अकबर के समय में और तीनों बार इसकी परिणति जौहर के रूप में हुई। वीरता और बलिदान की घटनाओं के साथ ही चित्तौड़ स्थापत्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण केन्द्र रहा। किले में स्थित भव्य महल, मंदिर, स्तम्भ, छतरियां, जलाशय एवं प्रवेश द्वार राजपूत स्थापत्य के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

प्रवेश द्वार : चित्तौड़गढ़ किले में प्रवेश हेतु सात द्वार बने हैं। प्रथम प्रवेश द्वार पाडन पोल के नाम से जाना जाता है। तत्पश्चात् भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, लक्ष्मण पोल तथा अन्त में मुख्य द्वार राम पोल तक पहुँचा जाता है, जिसका निर्माण 1459 ई. में हुआ। कुम्भा महल में प्रवेश हेतु दो भव्य द्वार हैं जिन्हें बड़ी पोल एवं त्रिपोलिया दरवाजे के नाम से जाना जाता है। किले का पूर्वी प्रवेश द्वार सूरजपोल कहलाता है।

कुम्भा महल : महाराणा कुम्भा (1433-68 ई.) द्वारा इस महल में किये गये परिवर्तन एवं परिवर्द्धन के कारण इसे कुम्भा महल के नाम से जाना जाता है। दरवाजे से होकर दक्षिण में स्थित

खुले प्रांगण एवं तत्पश्चात दरीखाने तक पहुँचा जा सकता है। महल के मुख्य परिसर में सूरज गोखड़ा, जनाना महल, कंवरपदा का महल व अन्य आवासीय कक्ष स्थित हैं जिनमें प्रवेश हेतु दरीखाने से छोटा प्रवेश द्वार है। परिसर के अन्दर ही पन्नाधाय एवं मीरा के आवास स्थित हैं।

पद्मिनी महल : रानी पद्मिनी के नाम से प्रसिद्ध यह महल

पद्मिनी तालाब के उत्तरी तट पर स्थित है। किवदन्ती है कि राणा रतनसिंह ने महल के दक्षिण भाग में स्थित कमरे में लगे शीशे से रानी पद्मिनी के सौन्दर्य की झलक अलाउद्दीन खिलजी को दिखायी जिसके पश्चात् उसने चित्तौड़ को अधिकार में लेने हेतु आक्रमण किया। जलाशय के मध्य में मेहराब युक्त प्रवेश द्वारों के साथ तीन मंजिला भवन है जिसे जलमहल के नाम से जाना जाता है।

रतनसिंह महल : रत्नेश्वर तालाब के समीप स्थित इस महल का निर्माण राणा रतनसिंह द्वितीय (1528-31 ई.) ने करवाया था। विन्यास में यह महल आयताकार है तथा चारों ओर से कमरों एवं दूसरी मंजिल पर झरोखा युक्त वीथीओं से सुसज्जित है। मुख्य प्रवेश द्वार के उत्तर में गर्भगृह, अन्तराल तथा मण्डप युक्त रत्नेश्वर महादेव का मंदिर है।

समाधीश्वर मंदिर : शिव को समर्पित इस मंदिर का निर्माण परमार शासक भोज ने ग्यारहवीं सदी के मध्य में किया। 1428 ई. में मोकल ने इस मंदिर का पुनरुद्धार करवाया। क्षैतिज योजना में मंदिर गर्भगृह, अन्तराल एवं मण्डपयुक्त है जिसके उत्तर, दक्षिण

तथा पश्चिम में मुखमण्डप बने हैं। मण्डप की छत पिरामिडाकार है। गर्भगृह में विशाल शिव की त्रिमूर्ति स्थापित है।

कालिका माता मंदिर : मूलतः में सूर्य को समर्पित इस मंदिर का निर्माण राजा मानभंग ने आठवीं शती ई. में करवाया। क्षैतिज योजना में मंदिर पंचरथ गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप तथा मुखमण्डप युक्त है। मण्डप पार्श्व आलिन्द युक्त है। गर्भगृह की द्वारशाखा के उत्तरंग के मध्य ललाटबिम्ब में सूर्य की प्रतिमा है। वर्तमान में इस मंदिर में कालिका माता की पूजा अर्चना की जाती है।

कुम्भा स्वामी मंदिर : मूलतः वराह को समर्पित इस मंदिर का पुनर्निर्माण महाराणा कुम्भा (1433-68 ई.) ने करवाया। ऊँची जगती पर स्थित यह मंदिर क्षैतिज योजना में गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप तथा मुखमण्डप एवं खुले प्रदक्षिणापथयुक्त है। मंदिर के

सामने मण्डप में गरूड़ प्रतिमा है। मंदिर परिसर के दक्षिणी भाग में एक छोटा मंदिर है जो मीरा मंदिर के नाम से जाना जाता है।

कीर्ति स्तम्भ : सामान्यतः विजय स्तम्भ के नाम से प्रसिद्ध इस स्तम्भ का निर्माण महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. में करवाया।

विष्णु को समर्पित यह नौ मंजिला स्तम्भ 37.19 मीटर ऊँचा है जिसकी प्रत्येक मंजिल के सामने खुला हुआ छज्जा है। स्तम्भ के ऊपरी तल तक जाने हेतु अन्दर से सोपान बने हुए हैं। सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित शिलालेखों में चित्तौड़ के शासकों (हमीर से राणा कुम्भा तक) की वंशावली उत्कीर्ण है। पांचवीं मंजिल पर स्तम्भ के वास्तुकार जैता एवं उसके तीन पुत्रों नापा, पूजा और पोमा के नाम उत्कीर्ण हैं।

जैन कीर्ति स्तम्भ : प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित इस स्तम्भ का निर्माण जैन सम्प्रदाय के श्रेष्ठी जीजा ने 1300 ई. में करवाया। 24.5 मीटर ऊँचा छः मंजिला स्तम्भ चौकोर जगती पर स्थित है जिसमें ऊपरी मंजिल तक पहुँचने के लिए अन्दर से सोपान बने है। निचले तल के बाह्य भाग के चारों दिशाओं में चार तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। ऊपरी मंजिलों को सैकड़ों लघु आकृतियों से अलंकृत किया गया है।

गोमुख कुण्ड : महासती आहाते के दक्षिण में स्थित पवित्र गोमुख कुण्ड को सास-बहू एवं मंदाकिनी कुण्ड के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ स्तम्भयुक्त मण्डप में गोमुख उत्कीर्ण है जिससे अनवरत पानी का प्रवाह होता रहता है। किले में स्थित स्मृति स्मारकों में बागसिंह एवं राघवदेव का स्मारक मुख्य है जिन्होनें चित्तौड़ के आक्रमण के समय अपना बलिदान दिया था समाधीश्वर मंदिर के निकट स्थित महासती आहाता चित्तौड़ की महारानियों के सती स्थल का प्रतीक है।